

जो ध्यान तुम्हारा रखता है

सत्यम् शिवम् सुंदरम् संसार सारम्,
अबयंकरम् दुःख हरम् करुणा अवतारम्,
ज्योतृयम् स्वयंभू प्रकृतिक सुधारम्,
शिवस्वारामि जगत्स्वामी निर्विकारम्।

इस जग से अलग रहकर रूहां,
उस रब से रूह रुहान करो,
जो ध्यान तुम्हारा रखता है,
तुम भी उसका कुछ ध्यान करो।

होकर विदह चुप चाप बहा,
उस शिव के नेह की धारा में,
आत्म पंछी की उड़ने दो,
जो बंद है तन की कारा में,
शिव परमात्मा के दर्श वरस का,
सरस सरस रसपान करो,
इस जग से अलग रहकर रूहां,
उस रब से रूह रुहान करो.....

कर्मों के बंधन बंध जाते हैं,
जो जाने अनजाने में,
हैराजं योग की अग्नि सक्षम,
उनको भस्म कराने में,
अब डरदानी से वर पाकर,
निज का प्रताप कल्याण करो,
जो ध्यान तुम्हारा रखता है,
तुम भी उसका कुछ ध्यान करो.....

प्रभु जिनसे खुद मिलना चाहे,
उन लोगों की किसमत क्या कहिये,
शिव परम पिता को बच्चों से,
कितनी है मोहब्बत क्या कहिये,
गुणभंडारी से गुण लेकर,
आओ खुद को गुणवान करो,
इस जग से अलग रहकर रूहां,
उस रब से रूह रुहान करो.....

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/23275/title/jo-dhyan-tumhara-rakhta-hai>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |